क्रांतिदूत भाग ३

मित्रमेला



डॉ. मनीष श्रीवास्तव जी अपने सामाजिक एवं पारंपरिक विचारों को सोशल मीडिया पर @Shrimaan नाम के माध्यम से प्रकट करते रहे हैं। उनकी प्रथम पुस्तक "रूही - एक पहेली" एक प्रेम भरा उपन्यास था। दूसरी पुस्तक "मैं मुन्ना हूँ" एक सामाजिक समस्या पर चर्चा करती पुस्तक है। उनकी तीसरी पुस्तक एक शृंखला के रूप में प्रकाशित हुई है।

शृंखला का शीर्षक है "क्रांतिदूत" और विषय है भारत की स्वतंत्रता में सशस्त्र क्रांति में जीवन अर्पण करने वाले वीरों से परिचय। लेखक ने तीन अलग अलग विषयों पर पुस्तकें लिखकर ये प्रकट कर दिया है कि उनका लेखन किसी एक धारा में बंध कर रहना वाला नहीं है। उनके विचार स्वतंत्र हैं, और उसी स्वतंत्रता के साथ वे अन्यान्य विषयों पर लिखते रहेंगे।

भारतीय स्वतंत्रता समर में अपना जीवन अर्पण करने वाले स्वतंत्रता प्रेमी क्रांति दूतों के जीवन पर दस पुस्तकों की शृंखला है "क्रांतिदूत"। इसके तीन भाग #Jhansifiles #Kashi, और #MitraMela प्रकाशित हो

चुके हैं तथा अन्य भाग अभी प्रकाशन में हैं। #Jhansi, #Kashi, #MitraMela, किसी सोशल मीडिया पर चलने वाले चर्चित ट्रेंड से लगते हैं।

क्रांतिकारियों के जीवन पर आधारित इस शृंखला की पुस्तकों ने सचमुच ही एक नए ट्रेंड का आरंभ कर दिया है। जिस प्रकार इतिहास के महत्वपूर्ण क्षणों को कथा रूप में बतलाया गया है, वह अपने आप में एक अनूठा प्रयोग है। इस शैली में बहुत कम ही ऐतिहासिक प्रसंग पढ़ने को मिलते हैं।

शृंखला के प्रथम दो भाग झाँसी फाइल्स और काशी, हमें चंद्रशेखर आज़ाद और उनके दल से परिचय कराते हैं। तीसरे भाग में हम सावरकर से जुड़े किस्से सुनते हैं। सावरकर के जीवन में चापेकर बंधुओं की सशस्त्र क्रांति का क्या प्रभाव पड़ा और उसने आगे चलकर क्या रूप लिया? ये हमें पुस्तक पढ़कर ही समझ आएगा। नासिक के भगुर से आरंभ हुआ मित्रमेला लंदन में अभिनव भारत स्थापित कर डालता है। ये एक विश्वास की यात्रा है। इन किस्सों को पाठशाला के विद्यार्थियों की तरह पढ़ना और जानना, यही पुस्तक को एक नये प्रवाह से जोड़ता है।

आवरण पृष्ठ पर माता अष्टभुजा भवानी का चित्र है, उनके सामने एक बालक ध्यान मुद्रा में बैठा दिखता है। जब चापेकर बंधुओं के फांसी का समाचार सावरकर को प्राप्त होता है, तो बालक मन हताश हो जाता है। भारत जिसका इतिहास वीरों की भूमि के रूप में मिलता है, वह आज परतंत्र है। अंग्रेजों की दासता ने भारतीयों के बल के साथ साथ उनके विचारों को भी शिथिल कर दिया है। सावरकर इन्हीं विचारों में घंटों बैठे रहते हैं उनकी आँखों से अश्रु धारा बहती रहती है।

बचपन में जब सावरकर हताश हो जाते और अपनी माँ को याद करते, तब पिता कहते थे, "तात्या माता अष्टभुजा भवानी ही तेरी माँ हैं। हमारे कुल की देवी माता अष्टभुजा भवानी की हमारे कुल पर बहुत कृपा है, इन्हें ही अपनी माँ समझ।"

आज जब बालक सावरकर का मन हताश है, तो वे माता के समक्ष आते हैं और उनके चरणों में बैठकर उनकी स्तुति करते हैं। माता के चरणों में बैठकर सावरकर ये शपथ लेते हैं-

"हे माँ, मैं आज आपके सामने यह सौगंध लेता हूँ कि आज से मेरा जीवन इस देश की स्वतंत्रता के लिए समर्पित है। आज से मेरे जीवन का एक ही उद्देश्य होगा और वो है भारत की अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति।"

- बाल सावरकर

सावरकर बचपन से ही स्वयं को राष्ट्र को समर्पित कर देते हैं। उनके बचपन के वीरता के किस्से अनेक हैं, कुछ प्रसंग यहाँ पुस्तक में आते हैं। अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध जो उन्होंने अभियान चलाया उससे डरकर अंग्रेजों ने उन्हें दोहरे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। उन्हें बेड़ियों से बांधकर कालापानी की क़ैद में भेज दिया गया है। मित्रमेला की पाठशाला इसी क़ैद में अपने बिल्ले पर छपे अंकों को देखते सावरकर की चर्चा से आरंभ होती है।

लेखन में एक नया और अनूठा प्रयोग इतिहास को जानने में रुचि जगाता है। पाठशाला में किसी पाठ की तरह ऐतिहासिक प्रसंगों को कथा रूप में सुनना बच्चों को उबा देने वाला इतिहास का पाठ नहीं लगता। वे बड़े चाव से इसे सुनते हैं और बीच-बीच में प्रश्न करके अपने संशय भी दूर करते हैं। इस तरह नई पीढ़ी को इतिहास सिखाना सरल हो जाता है। कथा एक प्रवाह में चलती है, पर बीच-बीच में आवश्यकता से अधिक टोका जाना प्रवाह को कमज़ोर करता है। कथा श्याम जी वर्मा जैसे अनेक महान चरित्रों से हमारा परिचय कराती है, हमें और स्वतंत्रता समर में उनके योगदान के विषय में जानने को मिलता है।

पिछले दो संस्करणों में जिल्दबंदी की जो समस्या थी, प्रकाशक ने उसे दूर किया है और अब पुस्तक हार्डकवर में ही उपलब्ध है। जिल्दबंदी काफी अच्छी है और पुस्तक के पन्ने भी अच्छी गुणवत्ता के हैं। कुल मिलाकर पुस्तक और पुस्तक का लेखन काफी अच्छा है। स्वतंत्रता समर में अपना जीवन समर्पित करने वाले युवाओं को जानने में पुस्तक मदद करती है, और इसे अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

पुस्तक : क्रांतिदूत (भाग-३) मित्रमेला

विक्रय लिंक - https://pages.razorpay.com/krantidoot

लेखक: डॉ. मनीष श्रीवास्तव

प्रकाशक : सर्व भाषा ट्रस्ट

मूल्य : 249

समीक्षक- प्रदीप राजपूत

पता - B/2 - 404 Madhuvan Glory Nava Naroda ,
Ahmedabad Gujarat - 382330
+91-8866634116